# तरबूज़ ढोने वाला गधा

लेखक : माइकल

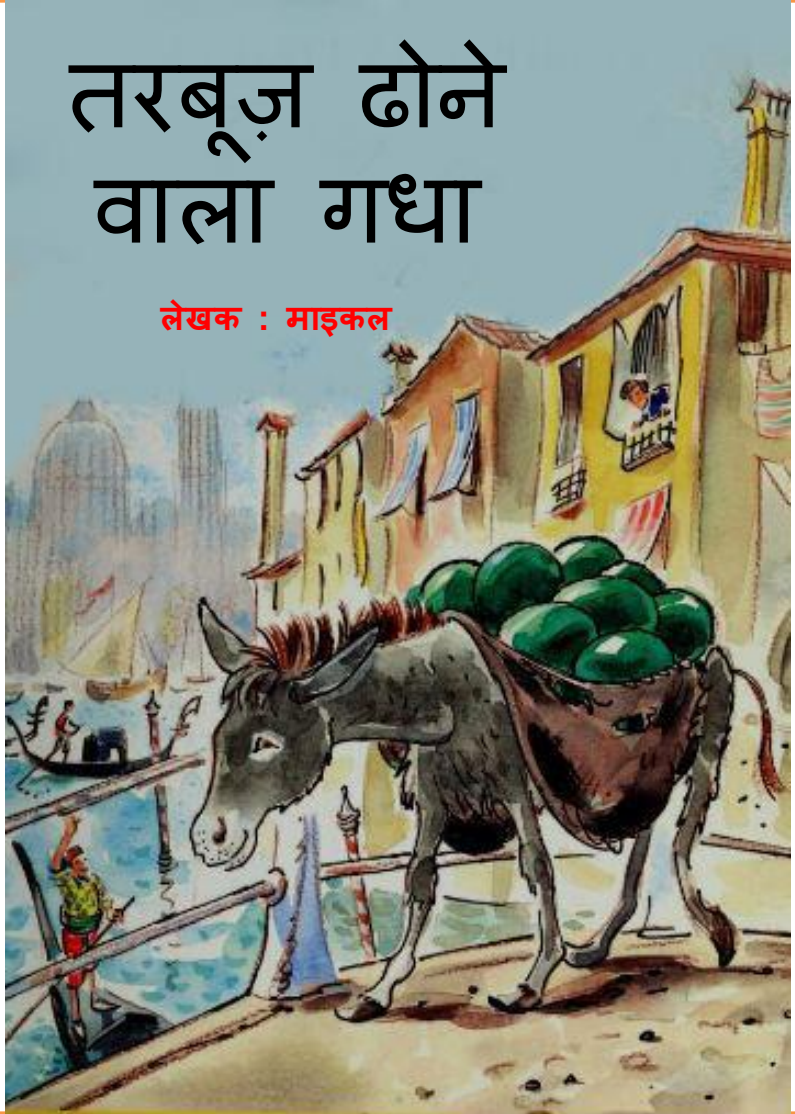

# तरबूज़ ढोने वाला गधा

# तरबूज़ ढोने वाला गधा

## अध्याय 1

जो-जो एक गधा था. उसके पहले उसका पिता एक गधा था और उसकी माँ भी. और इसी कारण जो-जो भी एक गधा ही था, चाहे गधा होना उसे अच्छा लगता था या नहीं. और सत्य में गधा होना उसे अच्छा न लगता था, बिलकुल भी नहीं.

बहुत सवेरे ही जो-जो काम में जुट जाता था. उसका स्वामी उस पर इतने तरबूज़ लाद देता था कि उसके लिये चलना भी कठिन हो जाता था. फिर उसका स्वामी उसे गाँव से बाहर ले जाता था और धूल भरे रास्ते से होते हुए वह महानगर, वेनिस, की ओर चल पड़ते थे.

जो-जो को वेनिस शहर अच्छा लगता था. यह उसका नगर था. उसे वहां की नहरें और उन पर बने पुल अच्छे लगते थे. उसे चौराहे और छतों के ऊपर से आती चर्च की घंटियों की आवाज़ अच्छी लगती थी. कई बार रुक कर वह पानी की उन लहरों को देखता था जो घरों से टकरातीं थी. ऐसा लगता था कि लहरें नगर को खींच कर सागर में ले जाना चाहती थीं.

नहरों के साथ-साथ बने तंग रास्तों पर उसका स्वामी उसे सारा दिन धकेलते हुए ले जाता था. और जो-जो चिल्ला-चिल्ला कर कहता रहता था, “तरबूज़, तरबूज़, ताज़ा तरबूज़ ले लो.” उसके इस तरह रेंकने की आवाज़ सारी गलियों और चौराहों में गूंजती थी. सब जान जाते कि तरबूज़ ढोने वाला गधा जो-जो आ गया था और पैसे लिये हुए कई लोग तरबूज़ लेने के लिए दौड़े आते थे. और सारे समय मक्खियाँ आकर जो-जो को सताती रहती थीं और उसके हर प्रयास के बावजूद दूर न हटती थीं.

सिर्फ शाम के समय जब ठंडी हवा में ओलिव के पेड़ के नीचे बैठा वह आराम करता था तभी उसे अपने स्वामी और मक्खियों से झुटकारा मिलता था. उस समय उसे शान्ति मिलती थी. वह निश्चिन्त भाव से मिट्टी में लुढ़कता था, फिर प्रसन्नता से हिलता-डुलता था और सोने के लिए मज़े से ज़मीन पर लेट जाता था.

## अध्याय 2

एक दिन भोर के समय उसके स्वामी ने हर दिन की भाँति उसे नींद से उठाया.

“उठो, उठो, उठो, निकम्मे गधे.” वह चिल्लाया. “आज से नगर की पिछली गलियों में हमारा घूमना बंद. अब हम राजमार्ग पर जायेंगे. मैंने सुना है कि सेंट मार्क्स चौराहे पर लोग तरबूज़ों के लिये दुगने पैसे देते हैं- वहीं सारे धनी लोग रहते हैं. क्या पता वेनिस का शासक, डोझ, स्वयं मेरे तरबूज़ ले.”

उस दिन तरबूज़ों का भार कुछ अधिक ही था, लेकिन जो-जो ने परवाह नहीं की. अचानक उसे लगा था कि उस दिन उसके साथ कुछ शुभ होने वाला था.

जब वह सेंट मार्क्स चौराहे पहुंचे, सूरज आकाश में बहुत ऊपर आ चुका था. चौराहा लोगों से भरा हुआ था.

“पता नहीं यह बात मेरे मन में पहले क्यों नहीं आई,” उसके स्वामी ने तरबूज़ों को उतराते हुए कहा.

“हमारे लिये यही उचित जगह है, बड़े गिरजाघर के ठीक सामने. सारे तरबूज़ झटपट बिक जायेंगे. चलो पुकारो, निकम्मे गधे, सब को पुकारो.”

“तरबूज़, तरबूज़, तरबूज़ ले लो!” जो-जो ने रेंकते हुए कहा और सारे चौराहे में उसकी आवाज़ गूँजने लगी.

सेंट मार्क्स में आये सभी लोग रुक कर मुड़े और उन्हें देखने लगे. और फिर एक व्यक्ति हंसने लगा. फिर दूसरा हंसा, फिर तीसरा और देखते ही देखते सब लोग हंसने लगे.

"किस बात पर हंस रहे हो?" जो-जो के स्वामी ने पूछा. "आपने तो पहले भी एक गधा देखा होगा, क्या नहीं देखा? इस में हंसने वाली क्या बात है?"

"ऊपर देखो," वह चिल्ला कर बोले, "अपने ऊपर देखो." जो-जो और उसके स्वामी ने ऊपर देखा. उनके पीछे, सूर्य के प्रकाश में चमकते, वेनिस के चार स्वर्ण घोड़े थे, संसार के सबसे सुंदर चार घोड़े. "सौन्दर्य और पशु!" भीड़ ने चिल्ला कर कहा. "सौन्दर्य और पशु." लज्जा से जो-जो ने अपना सिर झुका लिया.

लोग उन्हें घूर कर देखते रहे परन्तु किसी ने भी तरबूज़ नहीं खरीदे. "अपने गधे को पिछली गलियों में ले जाओ, वही तुम्हारी जगह है," उन्होंने कहा. "और अपने तरबूज़ भी ले जाओ. यहाँ हम लोग तरबूज़ नहीं खाते. तरबूज़ हमें अच्छे नहीं लगते."

फिर जब दुपहर की घंटी बजी, डोझ के महल का विशाल दरवाज़ा खुल गया और एक छोटी लड़की भाग कर सेंट मार्क्स चौराहे में आ गयी.

एक आया उस लड़की के पीछे भागती आई. “वापस आओ, वापस आओ,” आया चिल्लाई. “तुम जानती ही कि महल के बाहर जाने की तुम्हें अनुमति नहीं है.”

“लेकिन मुझे एक तरबूज़ चाहिये,” छोटी लड़की ने कहा. “और वैसे भी उस महल के अंदर सारा दिन बंद रहना मुझे अच्छा नहीं लगता. खेलने के लिये मेरे कोई मित्र भी नहीं है और मैं अकेले उकता गयी हूँ.”

“यह डोझ की बेटी है,” किसी ने फुसफुसा कर कहा. शीघ्र ही सब उसके सामने झुक कर उसका अभिवादन करने लगे. पर उन लोगों को अनदेखा कर, वह सीधी जो-जो के निकट रखे तरबूज़ों के ढेर के पास आ गयी.

“तुम्हारे एक तरबूज़ की क्या कीमत है?” उसने जो-जो के स्वामी से पूछा.

“इतना सम्मान, राजकुमारी, इतना सम्मान,” जो-जो के स्वामी ने कहा. “राजकुमारी, यह तो एक उपहार है. सारे वेनिस में मेरे तरबूज़ सबसे बढ़िया हैं. राजकुमारी, यह एक आपके लिये है.”

"धन्यवाद," डोझ की बेटी ने तरबूज़ लेते हुए कहा; और फिर उसने जो-जो को देखा.

"उसकी आँखें कितनी उदास और दयालु है," उसने कहा. और उसने आगे आकर जो-जो की गर्दन सहलाई. आज तक किसी ने जो-जो को इस तरह सहलाया न था. ख़ुशी से उसकी टांगें कांपने लगीं.

"राजकुमारी," आया ने डोझ की बेटी का हाथ खींचते हुए कहा. "तुम्हें उस गंदे जानवर को नहीं छूना चाहिये. क्या तुम देख नहीं सकती कि उसके सारे शरीर पर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं? इसके पहले कि तुम्हारे पिता तुम्हें यहाँ देख लें, वापस महल के अंदर चलो." और वह छोटी लड़की को धकेलते हुए वापस ले गयी.

जो-जो ने अपनी आँखें बंद कर लीं और छोटी लड़की की तस्वीर को अपने मन में बसा लिया ताकि वह उसे कभी भुला न पाये.

कुछ ही मिनटों में सारे तरबूज़ बिक गये. अचानक सेंट मार्क्स चौराहे में आया हर प्रतिष्ठित व्यक्ति तरबूज़ खा रहा था. आखिरकार जो वस्तु डोझ की बेटी को अच्छी लगती थी वह उन्हें भी अच्छी लगनी चाहिये.

उस ग्रीष्म ऋतु में, तरबूज़ों से लदा हुआ, जो-जो हर दिन सेंट मार्क्स चौराहे में आया और बड़े गिरजाघर के सामने चार स्वर्ण घोड़ों के नीचे खड़ा हुआ. और हर दिन दुपहर के समय, डोझ की बेटी अपना तरबूज़ लेने आई. और जब भी वह आई, जो-जो को देख कर वह मुस्कराना न भूली. वह हमेशा उससे प्यार से बात करती और जाने से पहले उसकी नाक हल्के से थपथपाती.

## अध्याय 3

एक दुपहर जब उसका स्वामी अपनी हैट से अपना चेहरा ढक कर ऊंघ रहा था और नगरवासी दिन की गर्मी में नींद में खोये थे, सदा की भांति जो-जो सेंट मार्क्स चौराहे में लगे चार स्वर्ण घोड़ों को देख रहा था. उन घोड़ों में वह सब गुण थे जो गधा पाना चाहता था पर कभी पा न सकता था.

"ओह, मैं तुम्हारी तरह क्यों नहीं हो सकता?" उसने चिल्ला कर कहा.

उसका स्वामी नींद से जाग गया और उसने गधे को ज़ोर से मारा.

"मुझे जगाने का साहस कैसे किया तुमने?" वह गरजा. "उन घोड़ों से बात करने से कुछ न होगा. देखते नहीं कि वह तो सिर्फ प्रतिमायें हैं? और प्रतिमायें बोलती नहीं हैं."

लेकिन जो-जो जानता था कि वह बात कर सकती थीं.

अगली सुबह जैसे ही जो-जो और उसका स्वामी चौराहे में आये, वेनिस का शासक महान डोझ अपने महल की खिड़की के पास आया. बिगुल बजाया गया और डोझ की बात सुनने के लिए सब लोग इकट्ठे हो गये.

"सब जान लें," डोझ ने कहा. "मैं अपनी बेटी के लिये उसके जन्मदिन पर नगर का सबसे बढ़िया घोड़ा खरीदूंगा. घोड़े के मूल्य के रूप में दस हज़ार डुकैट दूंगा. घोड़ा आज ही दुपहर में चुना जायेगा, क्योंकि आज मेरी बेटी का जन्मदिन है. घंटियाँ बजाई जाएँ!"

चौराहे में आते घोड़ों को जो-जो चुपचाप देखता रहा. हर घोड़ा दूसरे घोड़े से शानदार था, हर नये घोड़े को देख कर वह अपने को और भी छोटा और बदसूरत समझने लगा था. वहां काले अरबी घोड़े थे, जो ज़ोर-ज़ोर से सिर हिला रहे थे और फुफकार रहे थे. वहां भूरे रंग की स्पेनिश घोड़ियाँ थीं जिनके गर्दन के बाल लंबे, घने थे और जो इतराते हुए चल रही थीं. शीघ्र ही नगर के सारे शानदार घोड़े वहां पहुँच गये और एक भीड़ भी जमा हो गयी.

जैसे ही दुपहर की घंटी बजी, महान डोझ अपनी बेटी के साथ चौराहे में आ गया और एक भव्य परेड शुरू हो गयी. जैसे-जैसे घोड़े चलते गये, लोग तालियाँ बजाते रहे और जय-जयकार करते रहे.

फिर वेनिस के सब लोग उसकी पसंद जानने के लिये चुपचाप प्रतीक्षा करने लगे.

"मेरी बेटी आज दस वर्ष की हो गयी है," उसने कहा. "अब वह इतनी बड़ी हो गयी है कि वह स्वयं अपने लिये घोड़ा चुन सकती है." वह अपनी बेटी की ओर मुड़ा.

"अब मेरी बच्ची," उसने कहा. "बताओ तुम्हें कौन सा घोड़ा पसंद है?"

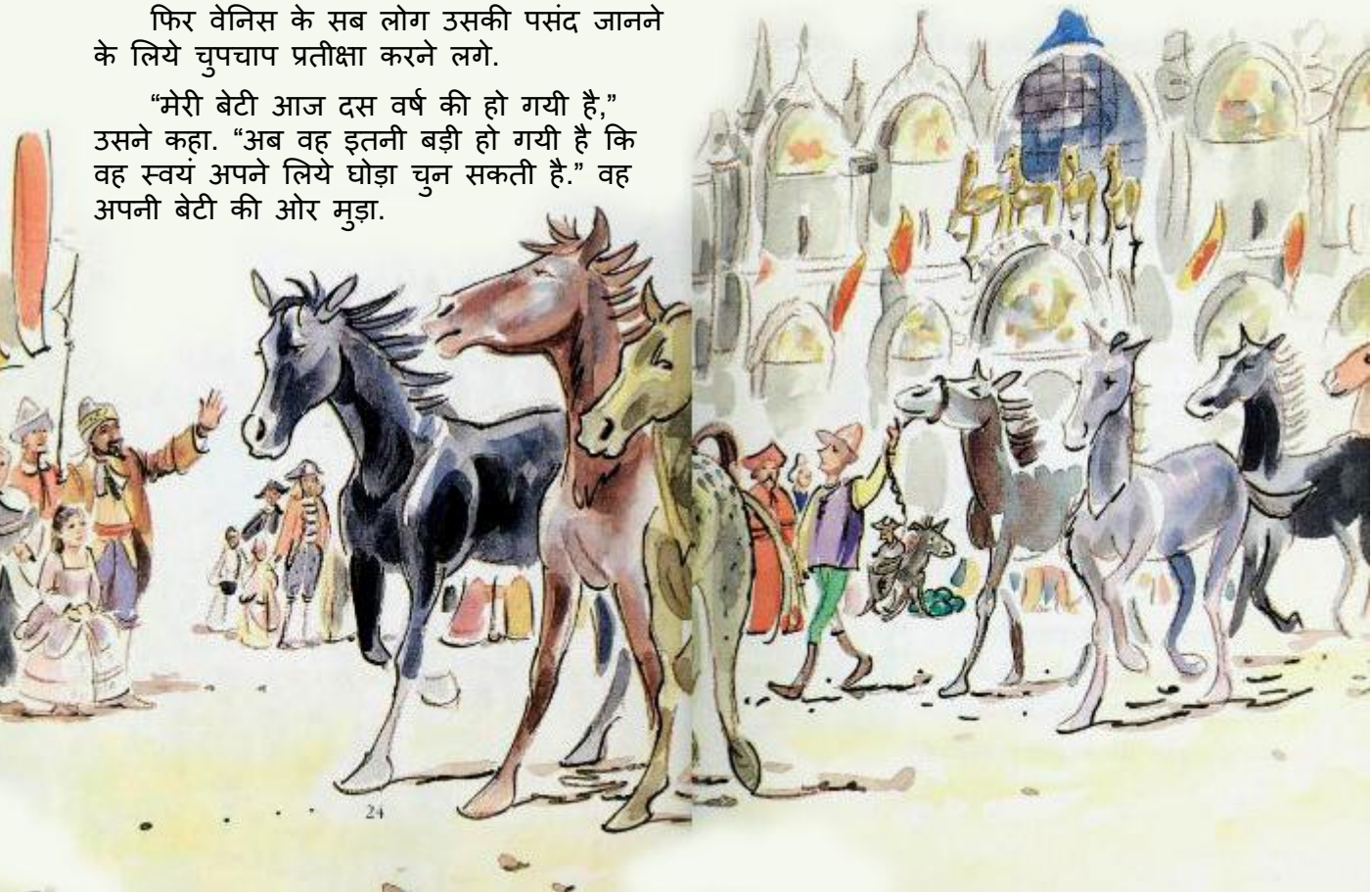

डोझ की बेटी प्रतीक्षारत घोड़ों की कतार के साथ धीरे-धीरे चली और फिर, आखिरकार उसने संकेत किया. “वहां जो है!” उसने चार स्वर्ण घोड़ों की ओर संकेत करते हुए कहा.

“लेकिन तुम उन्हें नहीं ले सकती,” डोझ ने हँसते हुए कहा. “तुम स्वर्ण घोड़े नहीं ले सकती. यह तो वेनिस के लोगों के हैं. यह तो सैंकड़ों सालों से वहीं हैं.”

“वह नहीं,” डोझ की बेटी ने कहा. ‘पिताजी, मुझे वह चाहिये, वह जो तरबूज़ों के पास खड़ा है.”

भीड़ धक से रह गयी.

“लेकिन वह तो एक गधा है! तुम्हें एक गधा चाहिये?” डोझ ने ऊंची आवाज में कहा.

“हाँ, पिताजी,” डोझ की बेटी ने कहा.

“ऐसा नहीं हो सकता,” डोझ ने कहा. “ऐसा बिलकुल नहीं हो सकता. पिस्सुओं के मारे किसी गधे पर मेरी बेटी कभी सवारी नहीं कर सकती!”

“मैं उस पर बैठ कर कहीं घूमना नहीं चाहती,” डोझ की बेटी ने कहा. “मैं चाहती हूँ कि वह मेरा मित्र बन जाए. पिताजी, मेरा कोई मित्र नहीं है जिसके साथ मैं खेलूं. आपने कहा था कि मैं किसी को भी चुन सकती हूँ. और वह पिस्सुओं का मारा नहीं है. वह सुंदर है. वह इन सबसे अधिक सुंदर है.”

“मुझ से बहस मत करो,” डोझ गरजा. “तुम सबसे शानदार घोड़ा चुन सकती थी और तुमने यह घटिया गधा चुना. देखो इसके पाँव भी कितने गंदे हैं.’

"पिताजी," डोझ की बेटी ने कहा, उसकी आँखें भर आयीं थीं. "अगर मैं गधा नहीं ले सकती तो मुझे कुछ नहीं चाहिये."

"ठीक है," डोझ ने गुस्से से कहा. "अगर तुम यही चाहती हो तो तुम्हें कोई उपहार नहीं मिलेगा. महल के अंदर वापस जाओ और अभी अपने कमरे में चली जाओ."

लेकिन डोझ की बेटी दौड़ कर चौराहे में वहां आ गई जहां जो-जो खड़ा था और उसकी गर्दन को उसने अपनी बाहों में भर लिया. "आज रात महल में आना," उसने फुसफुसा कर कहा. "और मेरी खिड़की के बाहर प्रतीक्षा करना. मैं नीचे आऊंगी और हम एक साथ भाग जायेंगे. अवश्य आना, जो-जो. मुझे निराश मत करना."

जब जो-जो का स्वामी उस को भीड़ के बीच में से खींच कर ले जा रहा था तब लोगों ने उसे गालियाँ दीं, पर जो-जो ने उन बातों की ज़रा भी परवाह न की. जब उन्होंने तरबूज़ों के छिलके उस पर फैंके तब भी उसने कोई परवाह नहीं की. जीवन में पहली बार जो-जो को इस बात पर गर्व था कि वह एक गधा था.

“ओ निकम्मे गधे, अपने मन में कोई सुनहरे सपने न देखने लगना,” उसके स्वामी ने कहा. “तुम सिर्फ एक गधे हो और वह भी बिलकुल निकम्मे गधे, इस बात को कभी न भूलना.

एक गधा हमेशा एक गधा ही रहता है. और तुम्हारे कारण मेरी बहुत हानि हुई है, इसलिये आज रात तुम्हें खाने को कुछ न मिलेगा. अगर तुम एक घोड़े होते तो आज मेरे पास दस हज़ार डुकैट होते और मैं धनी बन जाता. सुन रहे हो मेरी बात?”

जो-जो ने सब सुना, लेकिन उसकी किसी बात पर ध्यान न दिया. वह तो अपने मन में एक योजना बना रहा था.

## अध्याय 4

उस रात जो-जो सोया नहीं. वह बहुत उत्तेजित था. उसने तब तक प्रतीक्षा जब तक सब शांत नहीं हो गया. फिर वह काम में लग गया. रात के अँधेरे में जो-जो ने उस रस्सी को काट कर खोल लिया जिससे वह पेड़ के साथ बंधा था. फिर बड़े ध्यान से चलते हुए वह नींद में डूबे हुए गाँव से बाहर आ गया और सड़क के रास्ते वह वेनिस लौट आया. यह एक प्रचंड, बरसाती और तूफानी रात थी. उस रात में किसी ने जो-जो को वेनिस की खाली गलियों में चलते और छोटे पुलों को पार करते न सुना. सेंट मार्क्स चौराहे को पार कर, जो-जो डोझ के महल के निकट आ पहुंचा.

फिर उसने कुछ आवाजें सुनी. पहले तो उसे लगा कि यह आवाजें नगर की इमारतों और मीनारों के बीच से बहती आंधी की होंगीं. लेकिन फिर उसने ऊपर देखा. चारों स्वर्ण घोड़े एक आवाज़ में बोल रहे थे. उस आंधी में उनकी आवाज़ फुसफुसाने जैसी, पर पूरी तरह स्पष्ट, थी.

“छोटे गधे, छोटे गधे,” उन्होंने कहा. “हमारी बात सुनो, छोटे गधे. सागर बढ़ता आ रहा. तुम्हें लोगों को नींद से जगाना होगा और उन्हें सावधान करना होगा. छोटे गधे, उनसे कहो कि यहाँ से तुरंत चले जायें. जल्दी करो अन्यथा बहुत देर हो जायेगी. अगर तुम उनकी रक्षा न करोगे तो वह सब डूब जायेंगे. जल्दी करो, छोटे गधे, जल्दी करो!”

सरपट दौड़ता हुआ जो-जो, चौराहे के पार, पानी के किनारे आया. उसने खाड़ी के पार देखा. उसे सागर की लहरों की आवाज़ सुनाई दी. लहरें निकट आ रही थीं. उसने अपने खुरों के आसपास पानी को महसूस किया.

उसने पानी को चौराहे की ओर जाते देखा. उसने अपना सिर ऊपर उठाया, एक बहुत गहरी सांस ली और ज़ोर से रेंकने लगा. वह तब तक रेंकता रहा जब तक कि उसका सिर दर्द न करने लगा.

महल के अंदर अपने बेडरूम में डोझ की बेटी जो-जो की प्रतीक्षा कर रही थी. जब उसने उसके रेंकने की आवाज़ सुनी वह खिड़की से बाहर आकर नीचे उतर गई. वह भाग कर उसके पास आई. “इतना ज़ोर से नहीं, जो-जो,” उसने कहा. “तुम सब को जगा दोगे.”

और फिर उसने भी दूर से आती सागर के गरजने की आवाज़ सुनी और निकट आती लहरों की आवाज़ सुनी.

उसने अपने टगनों पर पानी को महसूस किया. फिर उसे समझ आया कि जो-जो क्यों चिल्ला रहा था.

डोझ की बेटी को अपनी पीठ पर बिठा कर जो-जो चिल्लाता हुआ नगर की गलियों में घूमने लगा और सब को नींद से उठाने लगा.

“क्या हुआ?” अपनी खिड़कियाँ खोलकर, बाहर अँधेरी गलियों की ओर देखते हुए लोग चिल्लाये. “रात में इस समय तरबूज़ बेचने आये हो?”

"नहीं, नहीं!" डोझ की बेटी ने चिल्ला कर कहा. "सागर का पानी नगर में घुस आया है. सारे नगर में पानी भर गया है. अपने-आप को बचाओ!"

और इस बीच सागर का पानी हर जगह भर रहा था. चौराहे में और बड़े गिरजाघर में और डोझ के महल में बाढ़ आ गयी थी. जो-जो के चिल्लाने की आवाज़ सुन नगरवासी जाग गये थे और अपनी जान बचाने के लिये भाग रहे थे.

तरबूज़ ढोने वाला गधे जो-जो ने और उस पर सवार डोझ की बेटी ने बच्चों और बूढ़ों को रास्ता दिखाया और उन्हें सुरक्षित जगह पहुंचा दिया. और हर पल नगर में पानी की गहराई बढ़ती गई. कई घर ढह गये और चौराहे में स्थित बड़ा घंटाघर भी पानी में गिर कर ध्वस्त हो गया.

"हमारे नगर में एक कहावत है," डोझ ने कहा, "कि अगर कभी वेनिस के लोगों पर कोई संकट आया तो चार स्वर्ण घोड़े लोगों को बचा लेंगे. यह अच्छी कहानी है, लेकिन सिर्फ एक कहानी है. हमें तो तरबूज़ ढोने वाला गधे जो-जो ने ही संकट से बचाया और यह बात हमें कभी भूलनी चाहिये."

जो-जो मन ही मन मुस्कराया और प्रसन्नता से फूला न समाया.

## अध्याय 5

जब सुबह हुई तो लोगों ने देखा कि एक भी व्यक्ति की जान नहीं गई थी. तरबूज़ ढोने वाला गधे जो-जो ने वेनिस के लोगों की जान बचाई थी और इसलिये वह उससे प्यार करने लगे थे. लोगों ने ही डोझ से कहा कि जो-जो की स्वर्ण प्रतिमा लगाई जाए. उन्होंने कहा कि उसकी प्रतिमा सेंट मार्क्स चौराहे में चार स्वर्ण घोड़ों के सामने लगाई जाये ताकि लोग उसे कभी भूल न पायें.

प्रतिमा के अनावरण समारोह में डोझ ने स्वयं जो-जो को फूलों का हार पहनाया और उसके विषय में कटु शब्द कहने के लिये उससे क्षमा मांगी.

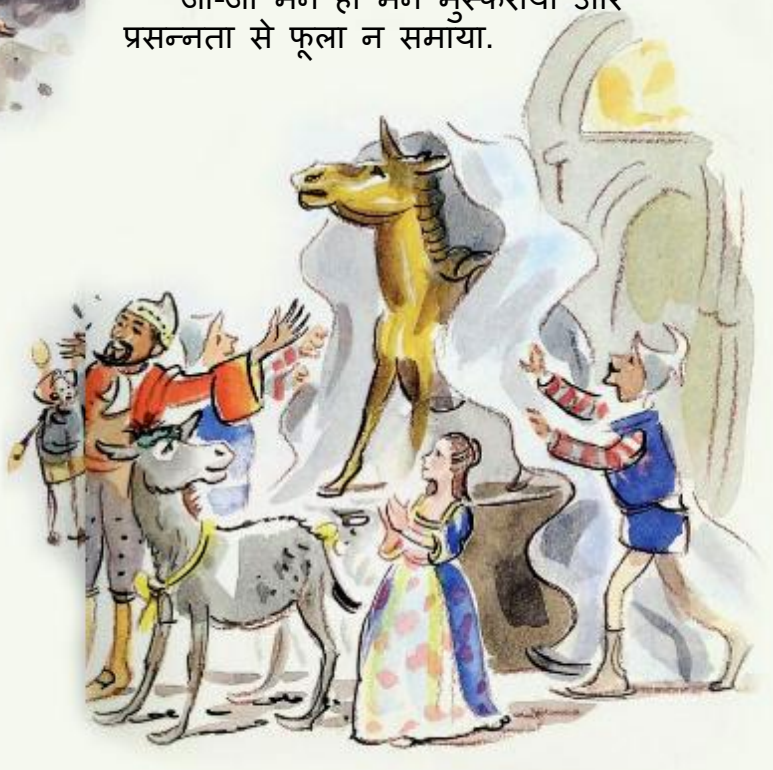

उस दिन के बाद जो-जो ने कभी कोई बोझ न उठाया. उठाई तो सिर्फ फूलों की वह मालायें जो लोग उसे पहना देते थे जब वह रास्ते पर चलता था. क्योंकि अब वह डोझ की बेटी का गधा था. वह डोझ की बेटी का मित्र था और जीवन भर उसके साथ रहा. और गधे तो तुम जानते ही हो कि लंबे समय तक जीते हैं.

**समाप्त**